शिक्षा निदेशालय, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली

उत्तर संकेत अभ्यास प्रश्न पत्र द्वितीय सत्र (2021-22)

कक्षा- बारहवीं

विषय- हिंदी (ऐच्छिक), विषय कोड-002

निर्धारित समय 2 घंटे **पूर्णांक 40**

सामान्य निर्देश :---

- अंक योजना का उद्देश्य मूल्यांकन को अधिकाधिक वस्तुनिष्ठ बनाना है।
- वर्णनात्मक प्रश्नों के अंक योजना में दिए गए उत्तर-बिंदु अंतिम नहीं हैं। यह सुझावात्मक एवं सांकेतिक हैं।
- यदि परीक्षार्थी इन संकेत बिंदुओं से भिन्न, किंतु उपयुक्त उत्तर दे तो उसे अंक दिए जाएँ।
- मूल्यांकन कार्य निजी व्याख्या के अनुसार नहीं, बल्कि योजना में निर्दिष्ट निर्देशानुसार अनुसार ही किया जाए।

खंड (क)

(कार्यालयी हिंदी और रचनात्मक लेखन)

प्रश्न (1) निम्नलिखित दिए गए 3 शीर्षकों में से **किसी एक विषय** पर लगभग **150 शब्दों में** रचनात्मक लेखन लिखिए। **(1x5=5अंक)**

भूमिका- 1अंक
विषय वस्तु- 3 अंक
भाषा- 1अंक

प्रश्न (2) दो में से किसी **एक विषय** पर लगभग **120 शब्दों में** पत्र **(1x5=5अंक)**

आरंभ और अंत की औपचारिकताएँ- 1अंक
विषय वस्तु- 3 अंक
भाषा- 1 अंक

प्रश्न 3 (क) कहानी के निम्नलिखित महत्वपूर्ण तत्व होते हैं।

1. कथानक / कथावस्तु -कहानी में प्रारंभ से अंत तक घटने वाली घटनाओं के माध्यम से जो कुछ कहा जाता है उसे कथानक कहते है। यह कहानी का मूल आधार होता है।
2. पात्र परिचय/चरित्र चित्रण- कहानी के चरित्रों द्वारा ही लेखक अपना उद्देश्य स्पष्ट कर समाज को अपना संदेश देता है।
3. संवाद- कहानी के संवाद संक्षिप्त पातत्रानुकूल और रोचक होने चाहिए ।

4. भाषा शैली- कहानीकार अपनी रूचि और परिवेश के अनुसार भाषा शैली का चुनाव कर कहानी को बोधगम्य बनाता है ।

5. वातावरण- देश,काल अथवा परिवेश के अनुसार ही कहानी में वातावरण नजर आना चाहिए।

6. उद्देश्य- प्रत्येक कहानी का कोई न कोई उद्देश्य होता है जैसे किसी सामाजिक बुराई के प्रति जागरूकता फैलाना,किसी चरित्र विशेष का महिमामंडन, कोई शिक्षा देना तथा मनोरंजन आदि।

अथवा

कहानी और नाटक में अंतर

कहानी की तरह नाटक भी साहित्य की एक प्रमुख विधा है। नाटक दृश्य विधा है , जिसे दर्शकों के सामने मंच पर प्रस्तुत करना होता है, जबकि कहानी को पाठक द्वारा पढ़ा जाता है। नाटक का संबंध अभिनय से है तथा नाटककार को अभिनेयता तथा मंच सज्जा का ध्यान रखना पड़ता है, जबकि कहानी में ऐसी बाध्यता आवश्यक नहीं है। कहानी को कई बार में थोड़ा-थोड़ा करके पढ़ा जा सकता है,जबकि नाटक को दर्शक एक ही बार में मंच पर पूरा देखते हैं। नाटक एक दर्शनीय विधा है, जबकि कहानी एक पठनीय विधा है । अतः नाटक में समय का बंधन महत्व रखता है । **(1x3=3 अंक)**

(ख) कहानी के कथानक में द्वंद्व का महत्व

कहानी के कथानक को आगे बढ़ाने में द्वंद्व बुनियादी महत्व रखता है। कथानक में असहमती,टकराव,घर्षण अथवा संघर्ष की स्थिति उत्पन्न होने तथा दो विरोधी तत्वों के टकराव या किसी खोज में आने वाली बाधाओं के कारण ही द्वंद्व पैदा होता है। इस प्रकार पाठकों के मन में कुतूहल जगाने एवं उत्सुकता लाने के लिए द्वंद्व विशेष महत्व रखता है।

अथवा

नाटक में समय के बंधन का औचित्य

साहित्य की अन्य विधाओं को पढ़ने के लिए पाठकों को सुविधा अनुसार कई दिनों में थोड़ा-थोड़ा पढ़ कर रचना को समाप्त करने का विकल्प मिल जाता है,परंतु नाटक को दर्शकों के समक्ष एक निश्चित समय अवधि में एक बारगी प्रस्तुत करना होता है। अतः नाटक में समय का बंधन होता है और एक निश्चित समय सीमा में ही उसे समाप्त हो जाना चाहिए। **(1x2=2 अंक)**

प्रश्न (4) शब्द सीमा लगभग **50 शब्दों में**

(क) समाचार लेखन की शैली

समाचार सदैव उल्टा पिरामिड शैली में लिखे जाते हैं। जिसके अंतर्गत सबसे महत्वपूर्ण तथ्य या सूचना अर्थात क्लाइमैक्स को, कहानी आदि विधाओं की तरह सबसे निचले हिस्से में ना होकर सबसे पहले आना होता है। इसे इंट्रो अथवा मुखड़ा भी कहते हैं, जिसके अंतर्गत चार ककारों यथा क्या, कौन, कहाँ और कब का जवाब होता है। दूसरे भाग बॉडी और तीसरे भाग समापन में दो अन्य ककारों क्यों और कैसे का जवाब मिल जाता है।

अथवा

विशेष लेखन एवं समाचार पत्रों में इसकी भूमिका

विशेष लेखन से तात्पर्य है- किसी खास विषय पर सामान्य से हटकर किया गया लेखन। समाचार पत्रों में सामान्य खबरों के अतिरिक्त आर्थिक,व्यापार,खेल जगत,विज्ञान प्रौद्योगिकी, कृषि, विदेश, पर्यावरण, शिक्षा, फिल्म, मनोरंजन तथा अपराध आदि अन्य क्षेत्रों की खबरों का विवरण भी होता है। इन विशेष समाचारों के लिए संवाददाताओं की रूचि एवं विशेषज्ञता के अनुसार उन्हें इन विशेष क्षेत्रों में कार्य करने का अवसर दिया जाता है । **(1x3 = 3 अंक)**

(ख) फीचर

फीचर एक सुव्यवस्थित,सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेख होता है,जिसका उद्देश्य पाठकों को सूचना देने,शिक्षित करने तथा उनका मनोरंजन करना होता है। फीचर में लेखक के पास अपनी राय या दृष्टिकोण और भावनाएं जाहिर करने का अवसर होता है। फीचर सदैव समाचार लिखने की शैली से अलग कथात्मक शैली में लिखे जाते हैं । फीचर को सजीव बनाने के लिए चित्र तथा ग्राफिक्स का प्रयोग भी किया जा सकता है। 200 से 2000 शब्दों की शब्द सीमा सहित फीचर अतीत,वर्तमान और भविष्य से संबंधित हो सकता है ।

अथवा

जंक फूड और इस के दुष्परिणाम

अपनी व्यस्त जीवन शैली के चलते आज का मनुष्य भोजन की नई शैली में फँसता जा रहा है, जिसे फास्ट या जंक फूड भी कहते हैं । हमारे देश के अधिकांश बच्चे जो हमारे देश का भविष्य है इसकी गिरफ्त में आ कर अपना स्वास्थ्य चौपट कर रहे हैं । चिकित्सकों और पोषण विशेषज्ञों के अनुसार नूडल्स, कोल्ड ड्रिंक और मोमोज जैसे फास्ट फूड खाने के बाद बच्चे ऐसी खतरनाक बीमारियों के शिकार हो रहे हैं जो अब तक बुढ़ापे की बीमारियाँ समझी जाती थीं। महानगरों के स्कूलों में पढ़ने वाले 60% से अधिक बच्चे फास्ट फूड फूड को मुख्य आहार के रूप में लेते हैं । भारत जैसे विकासशील देश में मोटापे की समस्या खतरनाक स्तर तक बढ़ चुकी है। इससे ब्लड प्रेशर और दिल के मरीजों की संख्या बढ़ रही है। एक अध्ययन के अनुसार बच्चों का बुद्धिलब्धि (AQI) स्तर आज कमजोर होने लगा है । इस प्रकार देखें तो हमारे स्वास्थ्य के लिए जंक फूड जहर के समान है। (अन्य तर्कपूर्ण उत्तर पर उचित अंक दिए जाएँ) **(1x2 = 2 अंक)**

खंड (ख)

(पाठ्यपुस्तक एवं पूरक पाठ्यपुस्तक)

प्रश्न (5) निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **दो प्रश्नों** के उत्तर **50-60** शब्दों में अपेक्षित। **(3+3 = 6 अंक)**

(क) भाव पक्ष - जैसा वृक्ष होता है वैसा ही उस पर फल लगता है। कोदो किस्म के धान के पौधे से उत्तम किस्म का चावल पैदा नहीं हो सकता । इसी प्रकार काले घोघे से मोती का जन्म नहीं हो सकता। पश्चाताप स्वरूप भरत अपनी माता कैकई को नीच कहकर अपने आपको भी राम के वन गमन और अपनी पिता की मृत्यु का कारण मानते हैं।

शिल्प सौंदर्य - भाषा-अवधि, रस- करुण रस, छंद-चौपाई, अलंकार- 'कि कोदव' में अनुप्रास अलंकार, गुण-माधुर्य गुण, शब्द शक्ति-लक्षणा शब्द शक्ति

(ख) चित्तौड़ की रानी नागमती भंवरे और काग को संबोधित करती हुई कहती है - हे काग! हे भंवरे! तुम जाकर मेरे पति राजा रत्नसेन को यह संदेश दे दो कि तुम्हारी पत्नी रानी नागमती विरह की अग्नि में जलकर भस्म हो गई है। उसके जलने से उत्पन्न हुआ धुआँ हमारे शरीर पर लग गया है, जिससे हमारा शरीर काला हो गया है। इन पंक्तियों में नागमती की विरह व्यथा का मार्मिक चित्रण किया गया है ।

(ग) इन पंक्तियों में अपने प्रिय पुत्र राम की विरह व्यथा झेल रहीं माता कौशल्या की मार्मिक दशा का अत्यंत करूण चित्रण किया गया है। राम के अश्वों को देखकर उनका यह दुख दुगना हो जाता है । इन घोड़ों को श्रीराम अपने कर कमलों से सहलाते थे ,पर अब यह राम के वियोग में अत्यंत व्याकुल हैं। ये घोड़े राम के वियोग में इस प्रकार मुरझाते जा रहे हैं, जैसे शीत ऋतु में कमल पर हिमपात हो जाता है । माता कौशल्या पथिक के हाथ राम को यह संदेशा भिजवाती हैं की उन्हें इन घोड़ों की जान की बड़ी चिंता है । एक बार आकर इन्हें अवश्य देख जाओ।

प्रश्न (6) निम्नलिखित में से किसी **एक प्रश्न** का उत्तर लगभग **30 से 40** शब्दों में अपेक्षित। **(1 x 2 = 2 अंक)**

(क) इस कथन से राम के स्वभाव की निम्नलिखित विशेषताओं का पता चलता है।

1. राम का स्वभाव अत्यंत विनीत एवं कोमल है ।
2. वे अपराधी पर भी क्रोध नहीं करते ।
3. अपने अनुज भरत पर तो उनकी विशेष कृपा है।

अथवा

(ख) कोयल और भंवरों का कलरव सुनकर नायिका अपने हाथों से कानों को बंद कर लेती है । इसका कारण यह है कि कोयल और भंवरे की मदमस्त ध्वनि सुनकर नायिका को आनंद तो आता है, परंतु वह उसकी बिरह व्यथा को और अधिक बढ़ा देती है । यह बिरहाग्नि कहीं उसे जलाकर राख न कर दे, यही सोचकर नायिका अपने कानों को हाथों से बंद कर लेती है।

प्रश्न (7) निम्नलिखित में से किन्ही **दो प्रश्नों** के उत्तर लगभग **50 से 60** शब्दों में अपेक्षित। **(3+3=6अंक)**

(क) स्वातंत्र्योत्तर भारत में विकास के नाम पर पश्चिमी सभ्यता का अंधानुकरण और प्रकृति का अंधाधुंध दोहन ही भारत की सबसे बड़ी ट्रेजेडी है । शासक वर्ग ने कभी भी प्रगति और विकास के पैमाने में प्रकृति, मनुष्य और संस्कृति में संतुलन स्थापित करने का प्रयास नहीं किया । यही कारण है कि विकास के नाम पर अनेक प्राकृतिक स्थल उजाड़ दिए जाते हैं, संस्कृतियों को नष्ट कर दिया जाता है और परिवारों को उनके घरों से उजाड़ दिया जाता है।

(ख) इस कहानी में लेखक ने शेर को सत्ता की व्यवस्था का प्रतीक बताया है। सत्ता व्यवस्था तभी तक खामोश रहती है जब तक हम इसकी हां में हां मिलाते रहते हैं। सत्ता की अवज्ञा होते ही व्यवस्था खूंखार हो जाती है और विरोध में उठे स्वर को कुचलने का भरपूर प्रयास करने लगती है। लेखक द्वारा शेर की निरंकुश गतिविधियों पर प्रश्नचिन्ह लगाने पर शेर लेखक पर झपट पड़ता है।

(ग) बंगाली साहित्य के जाने माने लेखक शरतचंद्र चट्टोपाध्याय के उपन्यास 'देवदास' की तर्ज पर ही इस कहानी का शीर्षक दूसरा देवदास रखा गया है । यहां देवदास शब्द प्रतीकात्मक है। जिस प्रकार देवदास उपन्यास का नायक देवदास पारो को पाने के लिए पागलपन की हद तक गुजर जाता है, ठीक वैसे ही संभव भी पारो की एक झलक पाने के लिए हर संभव प्रयास करता है। लेखक द्वारा उसे कहानी के शीर्षक के माध्यम से दूसरा देवदास कहना बिल्कुल उचित है।

प्रश्न (8) निम्नलिखित में से किसी **एक प्रश्न** का उत्तर लगभग **30 से 40** शब्दों में अपेक्षित। **(1 x 2 = 2अंक)**

(क) पारो मन ही मन संभव से प्रेम कर बैठती है और प्रेमातुर पारो अपनी मनोकामना पूरी होने पर मनसा देवी पर एक और चुनरी चढ़ाने का संकल्प लेती है। इसके तुरंत बाद पारो का संभव से इस प्रकार फिर से अचानक मिलना पारो को अपनी मनोकामना पूरी होने की ओर एक सकारात्मक कदम लगता है। वह स्वयं को भाग्यशाली समझती है क्योंकि देवी माँ ने उसकी मनोकामना इतनी जल्दी पूरी कर दी थी।

अथवा

(ख) मिल मालिक ने उत्पादन बढ़ाने के लिए देश के बड़े-बड़े विद्वानों को मोटी तनख्वाह पर रखा। मजदूरों को कटे हुए हाथ, लकड़ी के हाथ तथा लोहे के हाथ लगाने का पूरा प्रयास किया गया, परंतु इन सब से कोई लाभ नहीं हुआ और अंत में मजदूर मर गए । मजदूरों के चार हाथ ना लगा पाने पर मिल मालिक ने मजदूरों की मजदूरी को आधा करके अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त की।

प्रश्न (9) किन्ही **दो प्रश्नों** के उत्तर लगभग **30 से 40** शब्दों में अपेक्षित । **(2x2=4अंक)**

(क) गर्मी और लू से बचने के लिए घर से बाहर निकलते समय धोती या कमीज में प्याज की गाँठ बाँध ली जाती है । इसके अतिरिक्त कच्चे आम को भूनकर उसमें गुड़ या चीनी मिलाकर पन्ना बनाकर शरबत पीते हैं तथा इससे कभी-कभी सिर को भी धोते हैं ।

(ख) यह महज एक गलतफहमी है । रिनेसाँ से बहुत पहले राजा विक्रमादित्य, भोज और मुंज आदि ने भविष्य में जल संकट की समस्या को भांप लिया था, इसीलिए उन्होंने वर्षा के जल का समुचित संरक्षण करने के लिए बड़े बड़े तालाब, बावड़ियाँ और कुएँ बनवाए, परंतु आज के तथाकथित होशियार इंजीनियरों ने तालाबों को गाद से भर दिया है और नदी नालों के जल को भी दूषित कर दिया है।

(ग) प्रस्तुत पंक्तियाँ लेखक प्रभाष जोशी द्वारा लिखित पाठ 'अपना मालवा खाऊ उजाड़ू सभ्यता में' से ली गई हैं। मालवा की अतीत और वर्तमान में घटित मौसमी और भौगोलिक परिस्थितियों के आधार पर पर्यावरण संकट पर चिंता अभिव्यक्त की गई है।